राष्ट्रीय राज्यों के उदय के कारण (Causes of the Rise Of The Nation States)– सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी यूरोप में राष्ट्रीय राज्यों के उदय के निम्नलिखित कारण थे–

(1) सामन्तवाद का पतन (Downfall of the Feudalism)– मध्ययुगीन यूरोप की प्रमुख विशेषता सामन्तवादी व्यवस्था थी। सामन्तों के शनैः–शनैः अपनी शक्ति में वृद्धि कर छोटे–छोटे राज्यों के समान राज्य करना आरम्भ कर दिया था। **रेनर** ने लिखा है, ''वास्तव में सामन्त लोग ही छोटे–छोटे राजा थे जो परस्पर युद्ध किया करते थे। यही नहीं, वे राजा से भी युद्ध ठान लेते थे।'' सामन्तों का प्रभाव इतना अधिक बढ़ गया था कि इंग्लैण्ड में **'गुलाब के फूलों के युद्ध'** (War of Roses) के तीस वर्षों तक चलने क प्रमुख कारण सामन्तवादी व्यवस्था ही थी। कृषकों की स्थिति भी अत्यन्त सोचनीय थी। शोषण अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था। शोषण के सिद्धान्त पर आधारित सामन्तवादी व्यवस्था कब तक यथावत् बनी रहती। शोषित वर्ग के सिर उठाते ही सामन्तवाद का पतन हुआ। **हेनरी मार्टिन** का यह कथन कि 'सामन्तवाद की आस्तीन में ऐसा हथियार छिपा हुआ है जो किसी दिन उसी पर वार करेगा'–सार्थक सिद्ध हुआ। सामन्ती व्यवस्था का दमन करने के लिए इधर इंग्लैण्ड के शासक हेनरी सप्तम ने अभियान आरम्भ कर दिया और अपनी शक्ति में वद्धि की। शाषित प्रजा तो सामन्तवादी व्यवस्था में अत्यन्त पीड़ित थी। अतः जनता एवं राजा के मध्य सीधा सम्पर्क स्थापित होगा। यूरोप के अन्य देशों में भी इंग्लैण्ड के समान सामन्तवाद का विरोध किया जाने लगा। जनता द्वारा राजा का साथ दिए जाने से सामन्तवाद का पतन हुआ। राजा की शक्ति में वृद्धि हुई। फलस्वरूप निरंकुश राजतन्त्रों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(2) मध्यम वर्ग का उत्थान (Rise of the Middle Class)– सामन्ती व्यवस्था का पतन मध्यम वर्ग के उत्थान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में मध्यम वग की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ हो गयी। मध्यम वर्ग ने अपने व्यापार एवं वाणिज्य के विकास एवं सुरक्षा की दृष्टि से राजतन्त्र का समर्थन किया। राजाओं ने भी व्यापार एवं वाणिज्य को संरक्षण प्रदान कर मध्यम वर्ग की सहानभूति प्राप्त कर ली। उपनिवेश स्थापना को बढ़ावा मिला, प्रबुद्ध वर्ग ने राष्ट्रीयता की भावना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मैकियावेली द्वारा रचित 'प्रिन्स' नामक ग्रन्थ में राजा के 'दैवी अधिकारों के सिद्धान्त' की पुष्टि की। अतः पश्चिमी यूरोप में राजतन्त्र की स्थापना के महत्व को स्वीकार किया गया।

(3) नवीन आविश्कार (New Inventions)– पुनर्जागरण काल में हो रहे नए आविष्कारों ने राजतन्त्रों के उत्थान में विशेष योगदान दिया। बारूद का आविष्कार, तोपों का प्रयोग, यद्धकाल में परिवर्तन, नए–नए उपनिवेशों की खोज, एवं छापेखाने के आविष्कार इस दृष्टि से अत्यन्त कारगर सिद्ध हुए।

(5) पोपशाही की अवनति (Downfall of Popacy)– मध्यकाल के अन्त तक चर्च में अनेक दोष उत्पन्न हो गए थे। पोप जिसकी आज्ञा धार्मिक क्षेत्र में सर्वोपरि होती थी, स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझने लगा। पोप ने धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनीतिक क्षेत्र में भी हस्तक्षेप आरम्भ कर दिया, किन्तु आधुनिक युग के आगमन एवं पुनर्जागरण के कारण यूरोप की जनता अब तर्कवादी हो चुकी थी। उसने पोप की आचारहीनता, भ्रष्टता एवं विलासिता का विरोध किया। इधर पश्चिमी यूरोप के शासकों ने जो राजनीतिक मामलों से पोप की सत्ता क विरोध थे, जनता की भावनाओं का लाभ उठाया और पोप की सत्ता का जबरदस्त विरोध किया। धर्म–सुधार आन्दोलन के फलस्वरूप चर्च पूर्णतः राजा के अधीन हो गया। इससे राजा के सम्मान एवं पद की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। गिरजाघरों का प्रशासन अब राजा के अधिकार में आ गया। इस प्रकार राजतन्त्रों की शक्ति के विकास में पोपशाही की अवनति का एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ।

फ्रांस (France)– फ्रांस यूरोप का ऐसा प्रथम देश था, जिसमें सर्वप्रथम राजनीतिक एकता स्थापित हुई। फ्रांस में तेरहवीं शताब्दी में ही सामन्तों का दमन कर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की जा चुकी थी। फ्रांस का दुर्भाग्य था कि उसके कुछ समय पश्चात् ही फ्रांस और इंग्लैण्ड में सौ–वर्षीय युद्ध (Hundred Year War) प्रारम्भ हो गया, जिससे फ्रांस की शक्ति पर गम्भीर प्रभाव हुआं किन्तु इस युद्ध के अन्त में फ्रांस को सफलता मिलने से उसकी स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ तथा राजा के अधिकारों में भी वृद्धि हुई। फ्रांस के राजा ने अपने अधिकारों में हुई वृद्धि से लाभान्वित होकर भूमिकर लगाया तथा इस प्रकार अपार धन लगाकर राजा को शक्ति में और वृद्धि की। राजा की शक्ति को बढ़ाने के लिए लुई–XI (1461–1483ई0) ने बहुत कार्य किया। उसने अनेक सामन्तों की शक्ति को कुचला तथा सामन्तों को अपने नियन्त्रण में कर राजतन्त्र को सशक्त बनाया। लुई–XI ने फ्रांस में चर्च को भी पोप के नियन्त्रण से मुक्त कराके राजा के धार्मिक अधिकारों व चर्च पर नियन्त्रण में वृद्धि की।

इस प्रकार लुई–XI (Louis-XI) के प्रयत्नों से फ्रांस में राजा का सम्मान बढ़ा व राजशक्ति सुदृढ़ हुई। लुई–XI के उत्तराधिकारी चार्ल्स अष्टम ने (1483–1495) साम्राज्यवादी विस्तार की नीति को अपनाया। उसकी इस नीति ने यूरोपीय राजनीति में नवयुग का श्रीगणेश कर दिया। उसने नेपल्स पर अधिकार कर लिया, किन्तु उसकी यह विजय क्षणिक सिद्ध हुई क्योंकि उसे वेनिस मिलान पोप के संयुक्त मोर्चे का सामना करना पड़ा। 1496 ई0 में चार्ल्स अष्टम को नेपल्स खाली करना पड़ा, परन्तु इस घटना ने स्पेन एवं फ्रांस क मध्य दीर्घकालीन युद्धों की परिपाटी का श्रीगणेश कर दिया। चार्ल्स अष्टम के उत्तराधिकारी लुई–XII ने भी इटली पर अधिकार करने का प्रयास किया, किन्तु स्पेन के राजा फर्डीनेण्ड के कारण उसे अपने उद्देश्य में सफलता न मिल सकी।

इंग्लैण्डः 'हेनरी सप्तम' (England: Herery VII)– 1337ई0 से 1453 ई0 तक फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के मध्य होने वाले दीर्घ कालीन युद्धों में जिन्हें इतिहास में 'शतवर्षीय युद्ध' के नाम से जाना जाता है, प्रारम्भ में तो इंग्लैण्ड को सफलता प्राप्त हुई, किन्तु अन्ततः इंग्लैण्ड को पराजय का मुँह देखना पड़ा। उसे कैले को छोड़कर सभी जीते हुए फ्रांसीसी प्रदेश छोड़ने पड़े। शतवर्षीय युद्ध ने इंग्लैण्ड में जहाँ एक ओर राष्ट्रीयता की भावना को विकसित किया। वहीं दूसरी ओर शतवर्षीय युद्ध के समाप्त होने के दो वर्ष पश्चात् ही वहाँ भयंकर सामन्ती युद्ध जिसे इतिहास में **'गुलाबों का युद्ध'** (1455–1458) के नाम से जाना जाता है की भयंकर ज्वाला में जलना पड़ा। यह गृह युद्ध यार्क राजवंश, जिनका प्रतीक श्वेत गुलाब था और लंकास्टर राजवंश जिनका प्रतीक लाल गुलाब था, के सामन्तों व उनके अनुयायियों के मध्य पारस्परिक संघर्ष था। यह संघर्ष 1458 ई0 में वासवर्थ के युद्ध में रिचर्ड तृतीय के विरूद्ध हेनरी ट्यूडर की विजय के साथ खत्म हुआ। यही हेनरी ट्यूडर 1485 ई0 में हनरी सप्तम के नाम से इंग्लैण्ड के सिंहासन पर बैठा।

हेनरी सप्तम की गणना इंग्लैण्ड के महानतम् शासकों में की जाती है, क्योंकि उसने न केवल एक शक्तिशाली राजवंश की इंग्लैण्ड में स्थापना की वरन् इंग्लैण्ड के समाज को उसमें व्याप्त कुरीतियों एवं अन्धविश्वासों, सामन्ती अत्याचारों से मुक्त कर आधुनिक युग में प्रविष्ट कराते हुए बौद्धिकता एव तर्कवादिता के पथ की आर अग्रसर किया। यही कारण है कि उसके शासनकाल को इंग्लैण्ड के इतिहास में 'बीजारोपण एवं सुधार का समय' (A period of seeds and remedies) कहा गया है। हेनरी सप्तम ने एलिजाबेथ से विवाह करके 'गुलाब के फूलों के युद्ध' (War of Roses) को सदैव के लिए समाप्त कर इंग्लैण्ड में शान्ति स्थापित की तथा निरंकुश एवं अत्याचारों से बचाया, वहाँ दूसरी ओर इंग्लैण्ड में शक्तिशाली राजतन्त्र की स्थापना करके अपने सिंहासन की रक्षा भी की। हेनरी सप्तम को राजतन्त्र को शक्तिशाली बनाने के लिए दृढ़ आधार प्राप्त नहीं हुआ, किन्तु फिर भी वह अपने पयत्नों में सफल हुआ। हेनरी सप्तम ने इंग्लैण्ड में 'राजा' के पद की महत्ता, जो मध्ययुग के अन्त तक शक्तिशाली सामन्तों के कारण समाप्तप्रायः हो गयी थी, को पुनर्स्थापित किया। इस प्रकार अपने शासनकाल में उसने इंग्लैण्ड को शान्ति, सुरक्षा, सम्मान एवं दृढ़ सरकार प्रदान की।

हेनरी सप्तम (1485–1509) द्वारा इंग्लैण्ड में शक्तिशाली राजतन्त्र (जिसे नवीन राजतन्त्र कहा जाता है) की स्थापना करना सरल कार्य न था, क्योकि उसके पास न तो शक्तिशाली सेना थी और न ही धन। ऐसी स्थिति में उपर्युक्त सफलता प्राप्त करना निःसन्देह हेनरी सप्तम की कार्यकुशलता एवं योग्यता प्रमाणित करता है। हेनरी सप्तम द्वारा **नवीन राजतन्त्र** (New Monarchy) की स्थापना करने अथवा राजतन्त्र को दृढ़ करने से एक महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि इसने देश के सभी देश के सभी छोटे–बड़े भागों को आपस में मिलाकर लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को जन्म दिया। इसके दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखते हुए, निःसन्देह इसे हेनरी सप्तम की एक उपलब्धि कहा जा सकता है।

आधुनिक युग के आरम्भ के साथ ही देश की राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियों में महान परिवर्तन हुआ। यदि मध्यकालीन इतिहास का अवलोकन किया जाए तो ज्ञात होता है कि हेनरी ट्यूडर के सिंहासनरूढ़ होने से पूर्व देश में अशान्ति, अत्याचार एवं कुव्यवस्था व्याप्त थी। जनता पर अनेक अत्याचार होते थे, परन्तु राजा किसी भी प्रकार का सुधार करने में स्वयं को असमर्थ पाता था। इंग्लैण्ड में सन्ध्या होते ही लोग घरों में प्रवेश कर जाते थे क्योंकि चोर तथा लुटेरे सामाजिक जीवन को नारकीय बनाए हुए थे। इंग्लैण्ड की तत्कालीन सामाजिक स्थिति के विषय में वेनिस के एक राजदूत का कथन उल्लेखनीय है–'संसार क किसी भी देश में इतने चोर और लुटेरे नहीं है, जितने इस समय इंग्लैण्ड में है।''

सामन्त किसानों पर विभिन्न प्रकार से अत्याचार करते थे, उनकी शक्ति को चुनौती देने वाला कोई न था। इसके अतिरिक्त शिक्षा के अभाव के कारण दिशाहीन इंग्लैण्ड की जनता अन्धविश्वास के सघन अन्धकार में भटक रही थी। ऐसे विकट समय में हेनरी ट्यूडर का का हेनरी सप्तम के नाम से इंग्लैण्ड के सिंहासन पर आरूढ़ होना, रात्रि के घोर अन्धकार को मिटाते हुए ऊषा की लालिमा के समान था। ट्युडर–वंश राज्य के प्रारम्भ होते ही मध्यकाल की कुप्रथाओं की समाप्ति होने लगी। हेनरी सप्तम ने सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक बुराइयों को दूर करके समाज को शुद्ध करने का प्रयास किया। हेनरी सप्तम ने सामन्तवाद का अन्त किया तथा राजा और

प्रजा के मध्य सीधा सम्पर्क स्थापित किया। उसने शिक्षा की ओर पर्याप्त ध्यान दिया, परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड का आधुनिकीकरण एवं लोगो की विचारधारा में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए।

हेनरी सप्तम के निम्न प्रमुख उद्देश्य थेः–

1. राजा की शक्ति मे वृद्धि करने हेतु राजतन्त्र की स्थापना।
2. इंग्लैण्ड में व्याप्त व्यापक अशान्ति एवं अव्यवस्था के स्थान पर शान्ति एवं सुचारू व्यवस्था की स्थापना।
3. प्रशासन की कार्यकुशलता एवं क्षमता में वृद्धि करना।
4. शान्ति बनाए रखने के लिए वैदेशिक युद्ध एवं आन्तरिक विद्रोह को रोकना।

हेनरी सप्तम ने अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित कार्य किए–

(अ) विद्रोह तथा षडयन्त्रों का दमन (Suppression of Revolts)– हेनरी सप्तम को इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन होते ही अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। हेनरी ने इन विद्रोहों का कठोरतापूर्वक दमन किया।

हनरी के विरूद्ध विद्रोह करने वाला प्रथम व्यक्ति लैम्बर्ट सिमनल नामक एक नवयुवक था। यार्कवंशीय लोगों ने उसको अर्ल ऑफ वारविक (Earl of Warwich) घोषित किया था। लिंकन (Lincon) लार्ड लावेल (Lovell) तथा एडवर्ड चतुर्थ की बहिन मार्गरेट ऑफ वर्गण्डी (Margraret of Burgandy) ने उसे सहायता दी। लैम्बर्ट सिमनल, को जो कि ऑक्सफोर्ड में बाजा बजाने वाले एक व्यक्ति का पुत्र था, आयरलैण्ड का राजा घोषित कर दिया। इस प्रकार यह विद्रोह प्रारम्भ हुआ, किन्तु इसे दबाना हेनरी के लिए कठिन नहीं था क्योंकि विद्रोहियों ने असत्य का सहारा लिया था। हेनरी सप्तम ने वास्तविक अर्ल ऑफ वारविक को बन्दीगृह से मिलकर जनता के समक्ष प्रस्तुत किया, अतः इंग्लैण्ड की जनता का समर्थन हेनरी को प्राप्त हो गया। हेनरी ने 1487 ई0 में स्टोक के युद्ध (Battle of Stoke) में विद्रोहियों को परास्त किया। लिंकन की हत्या कर दी गयी तथा सिमनल को बन्दी बना लिया गया। उसकी कम आयु को देखते हुए हेनरी ने उसे क्षमा कर दिया ओर राजभवन के रसोई घर में नौकर रख लिया। अन्य विद्रोही व्यक्तियों को कठोर दण्ड दिया गया।

हेनरी के विरूद्ध दूसरा विद्रोह 1492 ई0 में प्रारम्भ हुआ सात वर्षों तक हेनरी के लिए संकट उत्पन्न करता रहा। पार्किन वार्वेक नामक व्यक्ति ने स्वयं को एडवर्ड चतुर्थ का पुत्र रिचर्ड घोषित किया तथा अनेक स्थानों से सहायता प्राप्त करने में सफल हुआ। उसे फ्रांस के राजा ने आमन्त्रित किया, परन्तु 1492 ई0 में ही हेनरी द्वारा फ्रांस से इटेपल्स की सन्धि किए जाने के परिणामस्वरूप फ्रांस ने निष्कासित कर दिया गयां उसे बर्गण्डी की मार्गरेट ने भी सहायता दी। वार्बेक ने 1492 ई0 में प्रथम बार उत्तरी आयरलैण्ड पर आक्रमण किया, किन्तु हेनरी ने उस युद्ध–स्थल छोड़कर भागने पर विवश किया। 1495ई0 में मार्गरेट से सहायता प्राप्त होने पर पुनः इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया, परन्तु असफल रहा। 1497ई0 में अन्तिम बार उसने आक्रमण किया, परन्तु टाण्टन के युद्ध में पार्किन वार्बेक को हेनरी ने परास्त किया तथा बन्दी बनाकर अर्ल ऑफ वारबिक के साथ लन्दन के टावर हाउस में रखा गया। दो वर्ष पश्चात् 1499 ई0 में उसने अर्ल ऑफ वारविक के साथ भागने की योजना बनायी, परन्तु भागने में असफल रहा। इस बार हेनरी ने पार्किन वार्बेक तथा अर्ल ऑफ वारविक को मृत्यु–दण्ड दिया।

तृतीय विद्रोही लार्ड लावेल (Lovell)था। वह रिचर्ड तृतीय का अनुयायी था तथा हेनरी सप्तम को राजा नहीं मानता था। उसने अपने साथियों के साथ हेनरी के विरूद्ध विद्रोह किया, किन्तु हेनरी ने सुगमतापूर्वक इस विद्रोह का दमन किया।

चौथा विद्रोह इतिहास में कार्निवालिस के नाम से प्रसिद्ध है। कोर्निश के निवासियों ने करों की अधिकता के विरोध में कर देने से इन्कार कर दिया तथा सशस्त्र विद्रोहियों ने लन्दन को घेर लिया। हेनरी ने 1497 ई0 में ब्लेक हीथ के युद्ध में इन विद्रोहियों को परास्त किया।

इस प्रकार हेनरी ने स्वयं के विरूद्ध हुए सभी विद्रोहों का सफलता एवं कठोरतापूर्वक दमन किया, किन्तु इन विद्रोहों के कारण वह सुख एवं शान्ति प्राप्त न कर सका, क्योकि तत्कालीन परिस्थितियां ही इतनी विपरीत थीं कि कोई व्यक्ति चाहे राजा क्यों न होता वह चैन से नहीं बैठ सकता था, जैसा कि एम0एम0 रीज का भी कथन है–'एक व्यक्ति जिसने तलवार के आधार पर राजगद्दी प्राप्त की है, जिसकी राजा की पदवी शक्तिहीन एवं नाममात्र की है और उसके विरूद्ध शक्तिशाली षड़यन्त्र उसे देश से निष्कासित करने के लिए प्रयत्नशील है, वह न तो राजनीतिक सिद्धान्तों को अपने राज्य का आधार बना सकता है और न नए तरह के वैधानिक परीक्षणों में उलझा सकता है।

(ब) सामन्त व्यवस्था का अन्त(End of Feudal System)– सामन्तों द्वारा जनता पर किए जा रहे अत्याचारों से हेनरी भली–भाँति परिचित था। सामन्त वर्ग अत्यधिक शक्तिशाली, युद्ध–लोलुप, अपराजकता फैलाने वाला था। हेनरी सप्तम एक शान्तिप्रिय व्यक्ति था तथा देश में शान्ति स्थापित करना चाहता था। देश में शान्ति स्थापित करने तथा जनता के कष्टों के निवारण हेतु हेनरी सप्तम् सामन्त वर्ग की शक्ति का दमन करना आवश्यक समझता था, अतएव **अपने इस उद्दे य की पूर्ति हेतु**

निम्नलिखित कार्य किएः–

(क) पुलिस का संगठन (Foundation of Police System)– इंग्लैण्ड की जनता की सुरक्षा हेतु हेनरी ने पुलिस का संगठन किया। हेनरी सप्तम के शासन से पूर्व इंग्लैण्ड में जन–जीवन अत्यन्त असुरक्षित था। यात्रा में लुटेरों का भय रहता था। पुलिस की व्यवस्था कर हेनरी ने जनता में व्याप्त भय को दूर किया तथा जन–जीवन को सामान्य स्थिति में लाने में सफल हुआ।

(ख) विधि निर्माण (Rule of Law)– देश मे सुचारू शासन व्यवस्था स्थापित करने के लिए कठोर नियमों को होना आवश्यक है जिनके अन्तर्गत अपराधियों एवं असामाजिक तत्वों को दण्ड दिया जा सके, अतः हेनरी ने संसद के द्वारा आवश्यक कानून पारित कराए। संसद के उसके पक्ष में होने के कारण ऐसा करने में उसे किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।

(ग) वर्दी और अधीन सेना के विरूद्ध नियम (Statute of Livery and Maintenance) –इंग्लैण्ड की जनता को चोर एवं लुटेरों से रक्षा के साधन उपलब्ध कराने तथा जनजीवन सामान्य बनाने के पश्चात् उसने सामन्तों की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया। सामन्तों की शक्ति को कुचलना आसान न था, अतः ऐसा करने के उद्देश्य से हेनरी ने संसद से वर्दीधारी तथा अधीन सेना रखने के विरूद्ध नियम (Statute of livery and maintenance) पारित कराए। इसके द्वारा कोई भी सामन्त व्यक्तिगत सेना नहीं रख सकता था। जिन्होनें इस नियम की अवहेलना की उन्हें कठोर दण्ड दिया गया। सामन्तों को न्यायालयों में परवी करने का अधिकार भी इस नियम के द्वारा समाप्त हो गया। यह नियम राजा की शक्ति में वृद्धि करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रमाणित हुआ। **रैम्जे म्योर** ने इस नियम को समयानुकूल एवं महत्वपूर्ण बताया है।

(घ) न्यायधीशों की नियुक्ति (Appointment of Judges)–हेनरी सप्तम ने शान्ति स्थापित करने के लिए न्यायाधीशा की नियुक्ति की ।इन न्यायाधीशों ने अपने–अपने प्रदेशों में सामन्तों को अशान्ति और अराजकता फैलाने पर कठोर दण्ड देने की आज्ञा दी।

(ड0) कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर की स्थापना (Court of Star Chamber)– हेनरी सप्तम ने सामन्तों के विरूद्ध अनेके नियम बनाए तथा उनका कठारतापूर्वक पालन करवाने के उद्देश्य से एक न्यायालय की स्थापना की। इस न्यायालय की स्थापना एक ऐसे भवन में की गयी थी जिसकी छत में सितारे जड़े थे। इसी कारण इसका नाम 'कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर' पड़ा। इस न्यायालय के न्यायाधीश राज्य के उच्च मन्त्री हुआ करते थे। इसने अपना कार्य अत्यन्त सुचारू रूप से चलाया, परिणामस्वरूप वर्दीधारी और अधीन सेना रखने के विरूद्ध बना नियम पूर्णतः सफल रहा। इस न्यायालय की अनेक शाखाएं भी स्थापित की गयी। जिन सामन्तो ने इनका विरोध किया उनका कठोरतापूर्वक दमन किया गया, परिणामस्वरूप सामन्त राजा से भयभीत होने लगे और अनुशासन प्रिय होने लगे।

(च) मन्त्रियों की नियुक्ति (Appointment of Ministers)– हेनरी सप्तम ने सामन्तों की शक्ति को पूर्णतः समाप्त करने के उद्देश्य से सामन्तों को प्रिवी कौंसिल से निकाल दिया तथा उनके स्थान पर आर्कबिशप मार्टन और फोक्स जैसे अपने अनुयायियों को नियुक्त किया तथा एडमण्ड–डडले व रिचर्ड एम्पसन को अपना मुख्य परामर्शदाता नियुक्त किया।

(छ) बारूद पर अधिकार (Gun Powder)– सामान्त वर्ग बारूद का प्रयोग करता था, अतः राजा को अनका दमन करने में अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ता था। सामन्तो के अधिकार में विशाल दुर्ग थे, जिनमें वह बारूद एवं सेना का प्रबन्ध रखते थे। हेनरी सप्तम के समय में बारूद के अनेक कारखाने इंग्लैण्ड में प्रारम्भ किए गए। राजा ने इन कारखानों को अपने अधिकार में ले लिया तथा बारूद के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाकर बड़ी–बड़ी तोपें अपने अधिकार में ले ली। हेनरी ने बारूद की सहायता से सामन्तों के दुर्गों को ध्वंस कर सामन्तों की शक्ति को पूर्णतः समाप्त किया।

(ज) मध्य वर्ग को अपने पक्ष में करना (Support of Middle Class)– इंग्लैण्ड में मध्य वर्ग की स्थिति भी दयनीय थी। हेनरी ने अनुभव किया कि मध्य वर्ग अशान्ति
एवं अराजकता का विरोधी तथा सामन्तों के विरूद्ध है तथा राजा के पक्ष में है, अतः हेनरी ने मध्यवर्गीय व्यक्तियों की स्थिति सुधार कर उनकी सहानुभूति प्राप्त की। उसने मध्यवर्गीय व्यक्तियों को उच्च पद प्रदान किए तथा अनेक व्यापार सम्बन्धी नियम पारित कर उनकी आर्थिक सहायता की। सामन्तों के स्थान पर उन्हें प्रिवी कौंसिल में भी रखा। इस प्रकार मध्य वर्ग की सहानुभूति प्राप्त कर हेनरी के लिए सामन्तों के दमन का कार्य सुगम हो गया।

(स) धनी बनने का प्रयत्न (Methods employed by Henry to become rich)–हेनरी सप्तम अनुभव करता था कि धन के अभाव में इंग्लैण्ड का सिंहासन उसके हाथ से निकल सकता है। अतः उसने सांविधानिक तथा अन्य तरीकों से धनोपार्जन करने को प्रयत्न किया। यद्यपि हेनरी सप्तम को संसद के द्वारा धन प्राप्त होता था, किन्तु वह उसके लिए पर्याप्त न था। हेनरी सप्तम का विचार सामन्तों के दमन के पश्चात् अब संसद की शक्ति को भी कम करना था। यदि हेनरी को धन प्राप्त करने को कोई अन्य रास्ता मिल जाता तो वह संसद से स्वतन्त्र हो जाता। अतः अपने इस उद्देश्य की पूर्ति उसने निम्नलिखित कार्य किए:–

(क) कर में वृद्धि (Increased taxes)– हेनरी के पास काफी भूमि थी, उस पर कर बढ़ाने के लिए राजा को किसी की आज्ञा लेने की आवश्यकता न थी। अतः हेनरी ने अपनी भूमि पर कर बढ़ा दिया जिससे उसकी व्यक्तिगत आय बावन हजार पौंड से बढ़कर एक लाख बयालीस हजार पौंड हो गयी।

(ख) सामन्तों की सम्पत्ति पर अधिकार (Confiscation of Nobles Property)– लंकास्टर एवं यार्क वंशों के मध्य हुए 'गुलाब के फूलों के युद्ध' (War of Roses) में अनेक सामन्तों की मृत्यु हो गयी थी। हेनरी सप्तम ने सभी ऐसे सामन्तों की सम्पत्ति को अपने अधिकार में ले लिया।

(ग) शान्तिप्रिय नीति द्वारा बचत (Saving by Peaceful Policy)– हेनरी ने शान्तिप्रिय नीति अपनाकर युद्धों में खर्च होने वाली एक बड़ी धनराशि की बचत की। 1492ई0 में फ्रांस के साथ इटेपल्स की सन्धि करके उसने हरजाने के रूप में फ्रांस से काफी धन प्राप्त किया।

(घ) आर्थिक दण्ड (Punishment in form of Fines)– स्वयं को धनी बनाने के उद्देश्य से हेनरी ने मृत्यु–दण्ड तथा कारावास की सजा कम करके उनके स्थान पर भारी आर्थिक दण्ड देने की नीति का पालन किया। कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर, कौंसिल ऑफ वेल्स तथा कौंसिल ऑफ नार्थ मुख्यतः केवल आर्थिक दण्ड ही अपराधियों को देते थे। कार्नवाल के विद्रोहियों से भी काफी धन वसूल किया गया। हेनरी ने एम्पसन तथा डडले को अपना वित्तीय प्रतिनिधि नियुक्त किया जिनका कार्य न्यायालयों में आर्थिक दण्ड के रूप में प्राप्त हुई धनाराशि को एकत्र करना था।

(ड0) क्षमा–पत्रों एवं पदों को बेचना (Sale fo Benevolence and Indulgences)– हेनरी सप्तम ने क्षमा–पत्रों को बेचना प्रारम्भ कर दिया। अपराधी इन क्षमा–पत्रों को खरीदकर अपने दण्ड से बच सकते थे। उच्च पदों को भी उसने बेचकर काफी धन प्राप्त किया।

(च) राजा का व्यक्तिगत व्यापार (Personal Trade)– एडवर्ड चतुर्थ के समान हेनरी ने अपना व्यक्तिगत व्यापार प्रारम्भ किया। उसने मुख्यतः ऊन, शराब तथा टिन का व्यापार किया। इस व्यापार से उसे बहुत लाभ हुआ।

(छ) बलात् उपहार (Forced Loans)– हेनरी सप्तम ने अपने मन्त्रियों की सहायता से काफी धन उपहार रूप में प्राप्त किया। हेनरी मार्टन नामक व्यक्ति को अपना वित्तीय प्रतिनिधि नियुक्त किया। उसने धन एकत्र करने के लिए एक नवीन नीति अपनायी, जिसे मोर्टन फोर्क के नाम से जाना जाता है। इन नीति के अन्तर्गत धनिक वर्ग से कहा जाता था कि आप अपने ऊपर काफी धन खर्च करते हैं, अतः कुछ धन देकर राजा की सहायता करें तथा निर्धनों से कहा जाता था कि आपने सादा जीवन व्यतीत करके काफी धन एकत्र कर रखा है, अपने धन में से कुछ धन देकर राजा की सहायता करें। इसके अतिरिक्त हेनरी ने अपने पुत्र तथा पुत्रो का विवाह के नाम से जनता से काफी धन प्राप्त किया।
इस प्रकार हेनरी ने विभिन्न साधना से पर्याप्त धन एकत्र कियां। अपनी मृत्यु के समय उसने अपने पुत्र के लिए अट्ठारह लाख पौंड की धनराशि छोड़ी।
हेनरी सप्तम एक कुशल एवं योग्य प्रशासक था। उसका प्रमुख उद्देश्य इंग्लैण्ड में सामन्तों की शक्ति समाप्त कर शान्ति स्थापित करना था। अपने इस उद्देश्य में वह सफल हुआ। इतिहासकार टौंट ने उसकी गृह–नीति के विषय में निम्न मत व्यक्त किया है– उसका सर्वोत्तम कार्य विदेशों में न होकर देश हो में हुआ था। लंकास्टर तथा यार्क में होने वाले युद्ध के कारण शासन में जो शिथिलता आ गयी थी उसे दूर करके उसने राजा की शक्ति का बढ़ाया। यद्यपि वह लंकास्टरवंशीय था तथापि अपने से पूर्व हुए तीन हेनरी शासकों के समान वैधानिक ढ़ंग से राज्य करने का उसने कोई प्रयत्न नहीं किया।

चार्ल्स पंचम (1520–1556) (Charles V)– 1506 ई0 में नीदरलैण्ड के शासक फिलिप की मृत्यु के पश्चात् उसका 6 वर्षीय पुत्र नीदरलैण्ड का शासक बना। अपनी माता जोआना की विक्षिप्त अवस्था के कारण चार्ल्स कैस्टाईल का शासक बन गया। 1516 ई0 में उसके नान फर्डीनेण्ड की मृत्यु हो जाने पर वह स्पेन, नेपेल्स, सापर्डीनिया, सिसली, अफ्रीका एवं अमरीकी उपनिवेशों का प्रशासक बन गया। 1519ई0 में अपने दादा सम्राट मैक्सिमिलियन के निधन के उपरान्त वह आस्टियन साम्राज्य (आस्ट्रिया, बोहेमिया, हंगरी, कार्निओला, कैरेन्थिया, एस्टोरिया एवं टाईरन) का भी स्वामी बन गया। किन्तु उसने आस्ट्रियन साम्राज्य में आने वाले उक्त प्रदेशों का प्रशासन अपने भाई फर्डीनेण्ड को सौंप दिया। 1520ई0 में पवित्र रोमन सम्राट के चुनाव में वह विजयी हुआ और एला शैपल के स्थान पर उसका राज्याभिषेक हुआ। इस प्रकार चार्ल्स, जो कि 'चार्ल्स पंचम' के नाम से सिंहासनरूढ़ हुआ, यूरोप के इतिहास में ऐसा सर्वाधिक शक्तिशाली एवं भाग्यवान शासक सिद्ध हुआ, जिसे कि उत्तराधिकार के रूप में विशाल साम्राज्य प्राप्त हो गया। इसी कारण इतिहासकार हेज ने तो यहाँ तक कहा है कि 'उस पर राज्यों एवं साम्राज्यों की वर्षा होने लगी।' इस विशाल साम्राज्य के शासक के रूप में उसने 1556ई0 तक शासन किया।

चार्ल्स पंचम की गृह–नीति (Home Policy of Charles V)– चार्ल्स पंचम की गृह–नीति का विवरण निम्नलिखित है–
1– समस्याएं (Problems)– चार्ल्स पंचम को उत्तराधिकार के रूप में एक विस्तृत साम्राज्य मिल तो गया था, किन्तु यह विशाल साम्राज्य काँटों की सेज से कम भी नहीं था। चार्ल्स पंचम को जितना विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ था, उतना ही उसका उत्तरदायित्व भी बढ़ गया था। उसका विशाल साम्राज्य ही उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण चुनौती थी। उसके विशाल साम्राज्य की विस्तृत सीमाएं एवं प्रादेशिक मित्रता उसकी प्रमुख समस्या थी। वास्तव में चार्ल्स पंचम का साम्राज्य तो एक राजवंशीय साम्राज्य था, जो कि अनेक राज्यों व प्रदेशां का असम्बद्ध समूह था। **हेज** के शब्दों में, ''इसमें प्राचीन समय के रोमन साम्राज्य या पश्चात् के रूसी साम्राज्य के सदृश एक केन्द्रीय सरकार नहीं थी, अपितु यह वैवाहिक सम्बन्धों के कारण एक विशेष राजवंश–हेप्सवर्ग राजवंश के अधीन अनेक राज्यों व प्रदशों का असम्बद्ध समूह था।'' प्रत्येक प्रान्त की अलग एवं स्वतन्त्र शासन व्यवस्था थी। यह ठीक है कि जर्मनी में नाममात्र की केन्द्रिय व्यवस्था थी, परन्तु स्पेन, नीदरलैण्ड एवं इटैलियन राज्यों में तो यह नाममात्र के लिए भी नहीं थी। जहां एक ओर नीदरलैण्ड्स में आने वाले सभी प्रान्त अपना–अपना अलग अस्तित्व एवं स्वतन्त्रता रखते थी वहीं दूसरी ओर स्पेनिश साम्राज्य में भी विभिन्न प्रान्तों की शासन–व्यवस्था अलग–अलग थी। स्पेनी एवं इटैलियन वर्गीयता जहां उसके लिए गम्भीर चुनौती थी तो पवित्र रोमन साम्राज्य होने के नाते उसका उत्तरदायित्व अत्यधिक बढ़ गया था। **हेज** ने इस समस्या को बाहय आडम्बर की संज्ञा दी है। जर्मनी में तीव्र गति से फैलने वाला धर्म सुधार आन्दोलन चार्ल्स के सम्मुख एक गम्भीर चुनौती था। इस प्रकार आन्तरिक क्षेत्र में चार्ल्स को आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं का सामना करना पड़ा जोकि अत्यधिक उलझी हुई थी।
चार्ल्स पंचम, अपनी इस समस्याओं के निराकरण में कहां तक सफल हुआ यह उसके स्पेन, नीदरलैण्ड एवं जर्मनी सम्राट (पवित्र रोमन सम्राट) के रूप में किए गए कार्यों से स्पष्ट होता हैं उसका स्पेन, नीदरलैण्ड्स एवं जर्मन सम्राट के रूप में शासन का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है–

2– स्पेन का शासन (Rule of Spain)– 1516ई0 में फर्डीनेण्ड की मृत्यु के पश्चात् स्पेनिश साम्राज्य के सम्राट के रूप चार्ल्स पंचम सिंहासनरूढ़ हुआ था। यहां पर उसने पूर्ण निरंकुशतापूर्वक शासन किया। आरागन एवं कैस्टाईल की संसदों ने चार्ल्स के निरंकुश अधिकारों को प्रतिबन्धित करने का जो प्रयत्न किया वह असफल सिद्ध हुआ। चार्ल्स की निरंकुशता स्पेन में भयंकर विद्रोह हुए, किन्तु चार्ल्स पंचम ने सामन्तों एवं नगर प्रतिनिधियों के पारस्परिक संघर्ष का लाभ उठाकर इन विद्रोहों को कुचलने में सफलता प्राप्त कर ली। सामन्त वर्ग ने नगर प्रतिनिधियों के विरूद्ध अब निरंकुश प्रशासन का समर्थन आरम्भ कर दिया। मौके का लाभा उठाकर चार्ल्स पंचम ने नगर–प्रतिनिधियों के अधिकारों को छीन लिया, उनके नगर प्रशासन सम्बन्धी स्थानीय अधिकार भी सीमित कर दिए। अब नगर के प्रशासन के संचालन के लिए एक राजकीय पदाधिकारी की नियुक्ति की गयी। अरागन व कैस्टाईल की संसदों ने जिस प्रकार प्रारम्भ में चार्ल्स के निरंकुश शासन का विरोध किया था उसने प्रभावित होकर चार्ल्स ने संसद की वास्तविक शक्ति को छीन लिया, किन्तु उसके कर्तव्य यथावत् बने रहे। अब संसद राज्याश्रित संस्था थी। 1523ई0 तक अपने निरंकुश प्रशासन